भावना

SUGAL & DAMANI
No. 11, Ponnappa Lane
Triplicane, Chennai 600 005.South India
Phone : 044 2848 1354 / 2848 1366
Email : Sugalchand@yahoo.com
Sugalchand@rediffmail.com

6/35, W E A Karol Bagh
New Delhi 110 005.
Phone : 011 2574 8882

405, Krushal Commercial Complex
G M Road, Above Shopper's Stop
Chembur (W), Mumbai 400 089.
Phone : 022 6755 4515

'C' Wing, Kapil Tower, IV Floor,
45, Dr. Ambedkar Road, Near Sangam Bridge,
Pune 411 001.
Phone : 020 3987 1500

1554, Sant Dass Street,
Clock Tower, Ludhiana 141008.
Phone : 0161 2745 448

SAMADHAN TRADING (P) LTD.
46A, Pandit Madan Mohan Maulviya arani
Chakra Veera Road North
Kolkatta 700 020. West Bengal
Phone : 033 3251 0329

भावना
Bhavana

अनुक्रमणिका

1.	A Pleasant & warm word of thanks	4
2.	मां बाप को भूलना नहीं	5
3.	ऐसा अपना घर हो	6
4.	वैष्णव जन	7
5.	बोल सको तो मीठा बोलो	8
6.	बदले युग की धारा	9
7.	उद्‌बोधन	10
8.	मंगलमय जीवन हो	12
9.	हर जन का रूप एकसा	13
10.	बुरा किसी का मत करना	14
11.	मैत्री की महिमा महान है	15
12.	संयममय जीवन हो	16
13.	करुणानीर बहाना है	17
14.	किसी प्यासे को पानी पिलाया नहीं	18
15.	किसी के काम जो आए	19
16.	मन का विश्वास कमजोर हो ना	20
17.	करुणा गान	21
18.	सर्वोत्तम आहार - शाकाहार	22
19.	गीत	23
20.	चिडिया की करूणा	24
21.	मेरी भावना	27
22.	हे प्रभु वीर ! दया के सागर	29
23.	आओ प्रकाश करें	30
24.	चमत्कारी जय जाप	31
25.	The Catalyst Hymns	32

A PLEASANT & WARM WORD OF THANKS

The slim volume of anthology, all of us owe to the generous participation in this venture by my family friends and business partners who are too many to mention. But I am taking the liberty of mentioning just a few dynamic and active figures who had enabled me to bring out this volume. Of course their activism and dynamism would have been ineffectual without their spouses and other family members pushing them on to be part of this delightful venture. My grateful thanks are due to the following albeit, this acknowledgement in no way entirely substitutes the value of their contribution.

Mrs. Meeta G Damani & G N Damani
Mrs. Kalpana Damani & R N Damani
Mrs. Madhu Chheda & Pravinbhai Chheda
Mrs. Sonal K Ajmera & Kishore K Ajmera
Mrs. Nirmala & S. Prasanchand Jain
Mrs. Kalavathy & S. Vinodh kumar
Mrs. Kinnari Chheda & Rajen Chheda
Mr. Nitesh R Damani
Mr. Pramodh P Jain

Let all of us join hands in offering our sincere thanks and gratitude to them.

N. SUGALCHAND JAIN
SUGAL & DAMANI
11, PONNAPPA LANE
TRIPLICANE, CHENNAI 600 005
TAMILNADU (INDIA)

Place : CHENNAI
Dt. 01-05-2007

मां-बाप को भूलना नहीं

भले ही हर बात को भूल जाइए, मां-बाप को भूलना नहीं,
अनगिनत हैं उपकार इनके, यह कभी भूलना नहीं।

धरती के सभी देवताओं को पूजा, तभी आपकी सूरत देखी,
इन पवित्र व्यक्तियों के दिल, कठोर बनकर तोडना नहीं।

अपने मुंह का कौर निकाल, तुम्हें खिलाकर बडा किया,
इन अमृत देने वालों के सामने, जहर कभी उगलना नहीं।

खूब प्यार किया तुमसे, तुम्हारी हर जिद पूरी की,
ऐसे प्यार करने वालों से, प्यार करना कभी भूलना नहीं।

चाहे लाखों कमाते हो, लेकिन मां-बाप खुश न रहें,
लाख नहीं वो खाक है, यह मानना भूलना नहीं।

भीगी जगह में खुद सो कर, सुख से सुलाया तुम्हें,
ऐसी अनमोल आंखों को, भूल से कभी भिगोना नहीं।

फूल बिछाये प्यार से, जिन्होंने तुम्हारी राहों पर,
ऐसी चाह करने वालों की राहों के, कांटे कभी बनना नहीं।

दौलत से हर चीज मिलेगी, लेकिन मां-बाप मिलते नहीं,
इनके पवित्र चरणों के प्रति, सम्मान कभी भूलना नहीं।

संतान से सेवा चाहो तो, संतान बनकर सेवा करो ,
जैसी करनी वैसी भरनी, यह न्याय कभी भूलना नहीं।

ऐसा अपना घर हो

गुण सौरभ से रहे महकता, जहां जीवन सुखकर हो
ऐसा अपना घर हो....।
कथनी करनी रहे एक सी, नहीं जिसमें अंतर हो
ऐसा अपना घर हो....।

विनय विवेक की नींव हो जिसमें, प्रेम प्यार की छत हो,
रहे मधुर व्यवहार सभी से, वचनों में अमृत हो,
सहनशीलता का हो आंगन, कटुता का न जहर हो....।

उस घर में मजबूत बने, विश्वास की सभी दीवारें,
कठिन घडी में बन जायें सब, एक दूजे के सहारे,
खिडकी हो अनुशासन की तो, विघटन का न असर हो....।

मर्यादा की चार दीवार में, सब मर्यादित हो,
सदा जीवन उच्च विचारों से, सब प्रमुदित हो
बडे जनों का हो आदर और छोटों पर भी महर हो....।

सेवा और संयोग का जिसमें, हो दरवाजा सुन्दर,
चित्त नहीं चारित्र की पूजा, हो जिस घर के अन्दर
धर्म के सम्मुख रहे सदा सब, पापों से जहां डर हो....।

स्वच्छ आचरण की हो बहारें, ज्ञान प्रकाश का हो पूरा,
मोक्ष लक्ष्य की सीढी हो तो, काम रहे न अधूरा,
"गौतम" से प्रभु फरमाते हैं, अब तो शाश्वत घर हो....।

-रचना : रत्नवंशीय श्री गौतममुनिजी म.सा.

वैष्णव जन

वैष्णव जन तो तेने कहिए, जे पीर पराई जाणे रे,
परदु:ख उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे।

सकल लोकमां सहुने बन्दे, निन्दा न करे केनी रे,
वाच काय मन निश्चल राखे, धन धन जननी तेनी रे।

समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे,
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे।

मोह माया व्यापे नहिं जेने, दृढ वैराग्य जेना मनमां रे,
रामनामशूं ताली लागी, सकल तीरथ तेना तनमां रे।

अणलोभी ने कपट रहित छे, काम क्रोध निवार्या रे,
भणै नरसैयो तेनु दरसन करतां, कुल एकोतेर तार्या रे।

–नरसी भगत

बोल सको तो मीठा बोलो

बोल सको तो मीठा बोलो,
कटु बोलना मत सीखो।
बचा सको तो जीव बचाओ,
जीव मारना मत सीखो।।
बता सको तो पथ बताओ,
पथ भटकाना मत सीखो।
जला सको तो दीप जलाओ,
हृदय जलाना मत सीखो।।
बिछा सको तो फूल बिछाओ,
शूल बिछाना मत सीखो।
मिटा सको तो अहंकार मिटाओ,
प्यार मिटाना मत सीखो।।
कमा सको तो पुण्य कमाओ,
पाप कमाना मत सीखो।
लगा सको तो बाग लगाओ,
आग लगाना मत सीखो।।
दे सको तो जीवन दे दो,
जीवन लेना मत सीखो।
बोल सको तो सच बोलो,
झूठ बोलना मत सीखो।।

–अध्यात्म–अमृत से साभार

बदले युग की धारा

नई दृष्टि हो, नई सृष्टि हो अणुव्रतों के द्वारा,
बदले युग की धारा....

मानवीय मूल्यों की रक्षा, अणुव्रत का आशय है,
आध्यात्मिकता प्रामाणिकता, उसका अमल हृदय है।
हिंसा के इस गहन तिमिर में, अणुव्रत एक उजारा।।
बदले युग की धारा....

धार्मिक है, पर नहीं कि नैतिक बहुत बडा विस्मय है,
नैतिकता से शून्य धर्म का, यह कैसा अभिनय है ?
इस उलझन का धर्म क्रांति ही, है कमनीय किनारा।।
बदले युग की धारा....

मूल्यपरक शिक्षा के युग में, संयम का अंकन हो,
सत्य अहिंसा से आप्लावित, जन-जन का जीवन हो।
भोगवाद के चक्रवात से, सहज मिले छुटकारा।।
बदले युग की धारा....

व्यक्ति बनेगा स्वस्थ तभी तो, स्वस्थ समाज बनेगा,
सघन स्वार्थ की मूर्च्छा का उपचार अणुव्रत देगा।
प्रकटे अब परमार्थ चेतना, उपकृत हो जग सारा।।
बदले युग की धारा.....

करें प्रबल पुरुषार्थ सभी में अभिनव आसा जागे,
जोडें सबके अन्तर मानस, को करुणा के धागे।
"तुलसी" मैत्री मंत्र अचल हो, नभ में ज्यों ध्रुवतारा।।
बदले युग की धारा....

उद्‌बोधन

कुछ भी नहीं असंभव जग में, सब संभव हो सकता है।
कार्य हेतु यदि कमर बांध लो, तो सब कुछ हो सकता है।।१।।

जीवन है नदिया की धारा जब चाहो मुड सकती है।
नरक लोक से स्वर्ग लोक से, जब चाहो जुड सकती है।।२।।

बंधन-बंधन क्या करते हो, बंधन मन के बंधन है।
साहस करो उठो झटका दो, बंधन क्षण के बंधन है।।३।।

बीत गया गत, बीत गया वह, अब उसकी चर्चा छोडो।
आज कर्म करो निष्ठा से, कल के मधु सपने जोडो।।४।।

तुम्हें स्वयं ही स्वर्णिम उज्ज्वल, निज इतिहास बनाना है।
करो सदा सत्कर्म विहंसते, कर्म-योग अपनाना है।।५।।

मन के हारे हार हुई है, मन के जीते जीत सदा।
सावधान मन हार न जाये, मन से मानव बना सदा।।६।।

तू सूरज है, पगले! फिर क्यों, अंधकार से डरता है।
तू तो अपनी एक किरण से, जग प्रदीप्त कर सकता है।।७।।

अन्तर्मन मे सद्‌भावों की, पावन-गंगा जब बहती।
पाप-पंक की कलुषित रेखा, नहीं एक क्षण को रहती।।८।।

धर्म हृदय की दिव्य ज्योति है, सावधान बुझने न पाये।
काम-क्रोध-मद-लोभ-अहं के, अंधकार में डूब न जाये।।९।।

जाति-धर्म के क्षुद्र अहं पर, लडना केवल पशुता है।।
जहां नहीं माधुर्य भाव हो, वहां कहां मानवता है।।१०।।

मंगल ही मंगल पाता है, जलते नित्य दीप से दीप।
जो जगती के दीप बनेंगे, उनके नहीं बुझेंगे दीप।।११।।

धर्म न बाहर की सज्जा में, जयकारों में आडम्बर में।
वह तो अंदर-अंदर गहरे, भावों के अविनाशी स्वर में।।१२।।

'मैं' भी टूटे 'तूं' भी टूटे, एक मात्र सब हम ही हम हों।
'एगे आया' की ध्वनि गूंजे, एक मात्र सब सम ही सम हों।।१३।।

यह भी अच्छा, वह भी अच्छा, अच्छा-अच्छा सब मिल जाये।
हर मानव की यही तमन्ना, किन्तु प्राप्ति का मर्म न पाये।।१४।।

अच्छा पाना है, तो पहले, खुद को अच्छा क्यों न बना लें।
जो जैसा है उसको वैसा मिलता, यह निज मंत्र बना लें।।१५।।

परिवर्तन से क्या घबराना, परिवर्तन ही जीवन है।
धूप-छांव के उलट फेर में, हम सबका शक्ति-परीक्षण है।।१६।।

सत्य, सत्य है, एक मुखी है, उसके दो मुख कभी न होते।
दम्भ एक ही वह रावण है, उसके दस क्या, शत मुख होते।।१७।।

एक जाति हो, एक राष्ट्र हो, एक धर्म हो धरती पर।
मानवता की 'अमर' ज्योति सब ओर जगे, जन-जन घर-घर।।१८।।

- उपाध्याय श्री अमरमुनि जी म.सा.

मंगलमय जीवन हो

मंगलमय जीवन हो
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् सबके जीवन का दर्शन हो।
कोई नहीं पराया, सारी धरती को अपनाएं ।

नहीं सताएं कभी किसी को, सबको गले लगाएं।
शांति, शांति, विश्व-शांति हो, प्रगति का सर्जन हो।।१।।

मधुर रहे व्यवहार हमारा, जो औरों से चाहें।
विपदा में भी कभी न छूटे, हमसे सच्ची राहें।
सत्य धर्म हो, सत्य विजय हो, सत्य हमारा प्रण हो।।२।।

जिसका जो अधिकार हो उसको, हम क्यों भला चुराए।
हम मानव हैं, मानवता का, मन में दीप जलाएं।
कर्मयोग से जो कुछ पाएं, वही हमारा धन हो।।३।।

छल-प्रपंच से दूर रहें हम, संग्रह पर अंकुश हो।
लोभ-मोह का रोग निवारें, चित्त हमारा वश हो।
ऐसा हो सौभाग्य कि हमसे, औरों का पालन हो।।४।।

जीवन में अनुशासन हो, तन निर्मल, मन निर्मल हो।
चन्द्र हमारी जीवन-दृष्टि रोशन हो, मंगल हो।
मंगल हो, मंगल हो सबका, हर घर में सुख-साधन हो।।५।।

-गणिवर्य श्रीचन्द्रप्रभ सागरजी म.सा.

हर जन का है रूप एकसा

राजस्थानी या बंगाली, पंजाबी का रूप एक सा।
दर्द उठे पीडा से तडपे, हर चेहरे का भाव एक सा।।

पहने रंग-बिरंगे कपडे, रूप बदल या रंग बदलकर।
उलझे इक-दूजे में आकर, ताना बाना बने एक सा।।

उत्तर से दक्षिण को जाओ, या पूर्व से पश्चिम आओ।
दिशाएं हैं पृथक - पृथक, पर संग एक सा ।।

जलता हुआ लाल भभूका, हर पुर प्रान्त देश में फैला।
कहे दिवाकर उस दिनकर को, उज्ज्वल वह प्रकाश एक सा।।

गंगा यमुना ब्रह्मपुत्र, चम्बल हो या कावेरी।
हर सरिता में बहता अविरल, पाप हरण वह नीर एकसा।।

तमिल तेलुगु गुरुमुखी, सिन्धी राजस्थानी मराठी।
भाषा कई छन्द बहुतेरे, पर शब्दों का मेल एक सा।।

फैले कहीं पठार, मरुस्थल घाटी और पहाड कहीं पर।
आपस में कलह करते, उन वृक्षों का तत्त्व एकसा।।

मन्दिर में बजते घण्टे या, मस्जिद मे झुकते सिजदा में।
गुरुद्वारों गिरजों में भैया, ईश्वर में विश्वास एक सा।।

कन्या से धुर काश्मीर तक, उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम।
वतन एक सा हिन्द एक सा, हरजन का है रुप एक सा।।

-हेमराज सिंह, राज, बालूपा, कोटा

बुरा किसी का मत करना

(लय : दिल लूटने वाले जादूगर....)

यदि भला किसी का कर न सको तो, बुरा किसी का मत करना।
अमृत न पिलाने को घर में तो, जहार पिलाते भी डरना।।

यदि सत्य मधुर ना बोल सको तो, झूठ कठिन भी मत बोलो।
यदि मौन रखो सबसे अच्छा, कम से कम विष तो मत घोलो।।
बोलो तो पहले तुम बोलो, फिर मुख-ताला खोला करना.... ।।

यदि घर न किसी का बांध सको तो, झोंपडियां न जला देना।
यदि मरहम-पट्टी न कर सको तो, खार नमक न लगा देना।।
यदि दीपक बनकर जल न सको तो, अंधकार भी मत करना.... ।।

यदि फूल नहीं बन सकते तो, कांटे बनकर न बिखर जाना।
मानव बनकर सहला न सको तो, दिल भी किसी का दुखाना ना।
यदि देव नहीं बन सकते तो, दानव बनकर भी मत मरना.... ।।

मुनि पुष्प अगर भगवान नहीं तो, कम से कम इंसान बनो।
किंतु न कभी शैतान बनो और कभी न तुम हैवान बनो।।
यदि सदाचार अपना ना सको तो, पापों में पग मत धरना.... ।।

-मुनि पुष्पजी म.सा.

मैत्री की महिमा महान है

पल कटुता के क्षण-क्षण मिलते मानव को संसार में
मैत्री-क्षमा-मृदुल-मरहम सी लगती है व्यवहार में।

प्रीत जीत लेती है मन को मधुर वचन वरदान से।
'ढाई-अक्षर' भारी पडते नीरस सकल संज्ञान से।।
हृदय उमडता निर्मल होकर जब भी कोमल प्यार में।
मैत्री मार्दव भाव जगाती सांसों की रफ्तार में।।

जो सुख एक शिशु पाता है मां की ममता छांव में।
उसकी ही अभिव्यक्ति होती है अधरों के गांव में।।
किलकारी बन चटकी रहती वहीं हंसी पुचकार में।
यह मैत्री का सबक है पहला मानव के आचार में।।

हृदय जीतना किसी और का सबसे सच्ची जीत है।
हारा हुआ भी 'क्षमा भाव' से बनता मन का मीत है।।
हृदयानंद उमड आता है करुणायुक्त आभार में।
'मैत्री की महिमा महान् है' सारे लोकाचार में।।

क्षमा मांगना, क्षमा चाहना, क्षमता वाली रीत है।
करुणा की गंगा से पावन बनता हृदय पुनीत है।।
'धर्म-अहिंसा' परम धर्म है क्षणभंगुर संसार में।
यही एक आश्रय है मित्रों, सारी मारामार में।।

-हुकमचंद जैन 'मेघ'

संयममय जीवन हो

नैतिकता की सुर-सरिता में जन-जन मन पावन हो,
संयममय जीवन हो.....
अपने से अपना अनुशासन, अणुव्रत की परिभाषा,
वर्ण, जाति या सम्प्रदाय से मुक्त धर्म की भाषा।
छोटे-छोटे संकल्पों से मानस परिवर्तन हो।।
संयममय जीवन हो.....
मैत्री-भाव हमारा सबसे, प्रतिदिन बढता जाए,
समता-सह-अस्तित्व, समन्वय-नीति सफलता पाए।
शुद्ध साध्य के लिए नियोजित, मात्र शुद्ध साधन हो।।
संयममय जीवन हो.....
विद्यार्थी या शिक्षक हो, मजदूर और व्यापारी,
नर हो नारी, बने नीतिमय जीवनचर्या सारी।
कथनी-करनी की समानता, में गतिशील चरण हो।।
संयममय जीवन हो.....
प्रभु बनकर के ही हम प्रभु की, पूजा कर सकते हैं,
प्रामाणिक बनकर ही संकट-सागर तर सकते हैं।
आज अहिंसा-शौर्य-वीर्य संयुत जीवन-दर्शन हो।।
संयममय जीवन हो.....
सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा,
'तुलसी' अणुव्रत सिंहनाद सारे जग में पसरेगा।
मानवीय आचार-संहिता में अर्पित तन-मन हो।।
संयममय जीवन हो.....

करुणा नीर बहाना है

(तर्ज : सूर्य चन्द्र आकाश पवन ने....)

जन जन के मन की पीडा हर, करुणा नीर बहाना है।
जीवमात्र में मैत्री भावना, का स्वर फिर सरसाना है।

मानव जन्म मिला, पर हमको दिव्य ज्योति फैलानी,
दीन दुःखी जन की पीडा, पर करुणा दवा लगानी,
प्राणीमात्र के मन हर्षित हों, सुख ऐसा उपजाना है।

कुटिल जनों पर क्रोध न करके, समता नीर बहाना,
गुण-गौरवशाली गुरुजन, पर श्रद्धा प्रेम बढाना,
दया अहिंसा करुणा सागर, का रस नित छलकाना है।

मैत्रीभाव सारा जग व्यापे, ऐसा कुछ कर जाना,
करुणा-कृपा भाव सरसे, विकसे आत्म-खजाना,
विश्वधर्म करुणामय पावन, ज्योतिर्मय कर जाना है।

किसी प्यासे को पानी पिलाया नहीं

किसी प्यासे को पानी पिलाया नहीं।
बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा।।
कभी गिरते हुए को उठाया नहीं।
बाद आंसू बहाने से क्या फायदा।।१।।

मैं मंदिर गया पूजा आरती की।
पूजा करते हुए ये ख्याल आ गया।।
कभी मां-बाप की सेवा की ही नहीं।
सिर्फ पूजा ही करने से क्या फायदा।।२।।

मैं तो सत्संग गया गुरु वाणी सुनी।
गुरु वाणी को सुनकर ख्याल आ गया।।
जब मानव को देखकर दया ना करी।
फिर मानव कहलाने का क्या फायदा ।।३।।

मैंने दान किया, जप-तप भी किया।
दान करते हुए ये ख्याल आ गया।।
कभी भूखे को भोजन खिलाया नहीं।
दान लाखों का करने से क्या फायदा।।४।।

मैं काशी, बनारस, मथुरा गया।
गंगा नहाते हुए यह ख्याल आ गया।।
तन को धोया मगर, मन को धोया नहीं।
फिर गंगा नहाने से क्या फायदा।।५।।

मैंने वेद पढे, मैंने शास्त्र पढे।
शास्त्र पढते हुए यह ख्याल आ गया।।
मैंने ज्ञान किसी को बांटा नहीं।
फिर ज्ञानी कहलाने से क्या फायदा।।६।।

किसी प्यासे को पानी पिलाया नहीं।
बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा।।
कभी गिरते हुए को उठाया नहीं।
बाद आंसू बहाने से क्या फायदा।।७।।

किसी के काम जो आए

किसी के काम जो आए, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द जो अपनाए, उसे इन्सान कहते हैं।।

कभी धनवान है कितना, कभी इन्सान निर्धन है।
कभी सुख है कभी दु:ख है, उसी का नाम जीवन है।
जो मुश्किलों से न घबराये, उसे इन्सान कहते हैं।
किसी के काम जो आए..... ।।१।।

यह दुनिया एक उलझन है, कहीं धोखा कहीं ठोकर,
कोई हंस-हंस के जीता है, कोई जीता है रो-रो कर।
जो गिरकर संभल जाये, उसे इन्सान कहते हैं।
किसी के काम जो आए..... ।।२।।

अगर गलती रुलाती है तो राहें भी दिखाती है।
बशर गलती का पुतला है, यह अक्सर हो ही जाती है।
जो गलती करके पछताये, उसे इन्सान कहते हैं।
किसी के काम जो आए..... ।।३।।

अकेले ही जो खा खाकर सदा गुजारा करते हैं।
यों करने को तो दुनियां में पशु भी पेट भरते हैं।।
पथिक जो बांटकर खायें, उसे इन्सान कहते हैं।
किसी के काम जो आए..... ।।४।।

मन का विश्वास कमजोर हो ना

इतनी शक्ति हमें देना दाता।
मन का विश्वास कमजोर हो ना।
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे।
भूलकर भी कोई भूल हो ना।।
दूर अज्ञान के हों अंधेरे।
तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।।
हर बुराई से बचते रहें हम।
जितनी भी दे भली जिंदगी दे।।
बैर हो ना किसी का किसी से।
भावना मन में बदले की हो ना।।
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे।
भूलकर भी कोई भूल हो ना।।
हम न सोचें हमें क्या मिला है।
हम ये सोचें किया क्या है अर्पण।।
फूल खुशियों के बांटे सभी को।
सबका जीवन ही बन जाये मधुवन।।
अपनी करुणा का जल तू बहा के।
कर दे पावन हर एक मन का कोना।।
हम चलें नेक रस्ते पे हम से।
भूलकर भी कोई भूल हो ना।।
इतनी शक्ति हमें देना दाता।
मन का विश्वास कमजोर हो ना।।

करुणा-गान

मैत्री भाव का पवित्र झरना, मेरे हृदय में बहा करे।
शुभ हो सारे विश्व जीवों का, नित्य भावना रहा करे।।

गुणवानों के गुण दर्शन से, मन यह मेरा नृत्य करे।
गुणीजनों के गुण पालन से, जीवन मेरा धन्य बने।।

दीन, क्रूर और दयाहीन को, देख के दिल यह भर जाये।
करुणा भीगी आंखों में से सेवा भाव उभर आये।।

भूले भटके जीवन पथिक को, मार्ग दिखाने खडा रहूं।
करे उपेक्षा प्रेमपंथ की, तो भी समता चित्त धरुं।।

'चित्रभानु' की यही भावना, मैत्री घर-घर सुख लाये।
वैर-विरोध के भाव छोडकर, गीत प्रेम के सब गायें।।

पूज्यपाद श्री चित्रभानुजी

सर्वोत्तम आहार - शाकाहार

तन मन होगा स्वस्थ उसी का, अपनाये जो शाकाहार।
तन रोगी मन काला होगा, करता हो जो मांसाहार।।

कोई धर्म नहीं कहता है, मांस किसी का भी खाना।
मनुज मूलत: शाकाहारी, ये तो सबने है माना।।

अपने जैसे जीव को खाकर, जो जीवन को है जीता।
रो-रो करके जीता है वह, तिल-तिल करके वो मरता।।

शांति अहिंसा का मूलक है, सदा शुद्ध ये शाकाहार।
हिंसा, नफरत पैदा करते, वह तो कलुषित मांसाहार।।

जीवन तत्त्व विटामिन इसमें, नहीं कभी भी है रहता।
पाचन में आवश्यक रेशा, किसी मांस में ना होता।।

रोग अनेकों मांस से होते, चिकित्सकों का है कहना।
फिर क्यों खाते इसको लोगों, मुझको भी तो समझाना।।

प्रकृति के नियमों का उल्लंघन, करता है ये मांसाहार।
जीवन का आधार बना लो, भाई मेरे शाकाहार।।

- अजीत जैन 'जलज'

गीत

तर्ज : ऐ मेरे वतन के लोगों

ऐ हिन्द देश के लोगों, तुम सुन लो करूणा कहानी।
क्यों दया धर्म बिसराया, क्यों दुनिया हुई बेगानी।।

जब सब को दूध पिलाया, मैं गौ माता कहलाई।
क्या है अपराध हमारा, जो काटे आज कसाई।
बस भीख प्राण की दे दो, मैं द्वार तुम्हारे आई।
हे सर्वोत्तम प्राणी, मत आज करो मनमानी।।
ऐ हिन्द देश..... ।।

जब जाउं कसाई खाने, चाबुक से पीटी जाउं।
उस उबले जल को तन पर, मैं सहन नहीं कर पाउं।
जब यंत्र मौत का आता, हाय-हाय चिल्लाई।
मेरा कोई साथ न देता, यह सबकी रीति पहचानी।।
ऐ हिन्द देश..... ।।

उस बेदर्दी ईश्वर ने, क्यों हमको मूक बनाया।
न हाथ दिये लडने को, मेरा वंश हुआ पराया।
कोई गौ पालक बन जाओ, कोई महावीर बन जाओ।
कोई शंकर बनकर मेरे, नन्दी की जान बचाओ।।
ऐ हिन्द देश के लोगों, तुम सुन लो करूणा कहानी।
क्यों दया धर्म बिसराया, क्यों दुनिया हुई बेगानी।।

प्रस्तोता : बृजेन्द्र कुमार

चिडिया की करुणा

एक शाश्वत कथा
जिसे साहस कहें या संयम कहें
या व्यथा
एक तालाब किनारे की
इमारत में लगी आग।
मच गई अफरा तफरी और भागमभाग
कुछ लोगों ने आग पर पानी डाला
कुछ लोगों ने आग में घिरे
लोगों को बाहर निकाला।
सबने वो किया
जो था जिसकी पहुंच में
एक चिडिया भी डाल रही थी पानी
भरकर अपनी चोंच में।
उसी पेड पर रहने वाले
कौवे ने कहा,
चिडिया बहन तू सुई की नोक से,
समस्या का ताला खोल रही है।
और पत्तों के बाट से पहाड तौल रही है
तेरी चोंच में जितना पानी आयेगा
उससे आग का एक शोला भी
नहीं बुझ पायेगा।
तब चिडिया ने दिया जवाब
एकदम लाजवाब ! मेरे भाई
मैं तेरी बात मानती हूं
चोंच में भरे पानी की
क्षमता पहचानती हूं
केवल इतना जानती हूं
जिस दिन इस घटना का

इतिहास लिखा जाएगा
मेरा नाम आग लगाने वालों में नहीं
आग बुझाने वालों में लिखा जाएगा।
चिडिया के खयालात थे कितने अच्छे,
चिडिया उडी और पहुंची उस पेड पर
जहां थे उसके छोटे-छोटे बच्चे
जहां का माहौल और भी गमगीन था
दिल को हिला देने वाला सीन था
मुसीबत के सन्नाटे घिर गए थे
तेज हवा से उसके बच्चे
तालाब में गिर गये थे
दूर हो गए बच्चे
बचाने की पहुंच से।
चिडिया फिर उलीचने लगी तालाब
अपनी नन्हीं सी चोंच से
अब तालाब बोला नादान चिडिया
तेरी कोशिशे व्यर्थ जाएगी
तू छोटी सी चोंच से
इतना विशाल तालाब
उलीच नहीं पाएगी और
तेरे मरते हुए बच्चों को बचा नहीं पाएगी
तब चिडिया ने जवाब दिया-
मेरे तालाब भ्राता
बच्चों के लिए कुछ भी कर सकती है
एक माता
तू अपने विशाल होने के गुमान में
अपना सिर धुन,
एक सच्ची घटना सुन
वो सामने वाले घर में

एक युवक रहता है
जिसकी नजर कमजोर और
उसे थोडा कम सुनाई देता है
परसों आंगन में टहल रहा था बेचारा
किसी दिल जले पडोसी ने फेंका
आंगन में जलता हुआ अंगारा
अंगारे की तरफ किसी
का ध्यान नहीं था
चहल कदमी करते युवक को
भी
इस बात का भान नहीं था
युवक धीरे-धीरे पहुंचा
अंगारे के पास
वक्त की थम गई सांस
बेटा बोला पापा आग- दूसरी तरफ भागो
पत्नी चिल्लाई प्राणनाथ
आग - नींद से जागो
बहन ने कहा भगवान मेरे भाई को बचाना
पिता बोले ईश्वर मेरे बेटे का पांव मत जलाना
जब बेटे के पांव और अंगारे की दूरी
केवल चार इंच बची
पास खडी मां को तुरंत एक युक्ति जंची
मां न चीखी, न चिल्लाई
न कोई स्वर दिया
इसके पहले कि
बेटे के पांव अंगारे पर पडे
मां ने अपना हाथ अंगारे पर धर दिया।

- अशोक भाटी

मेरी भावना

जिसने राग-द्वेष कामादिक, जीते सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्ष-मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया।।
बुद्ध वीर जिन हरि हर ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो।
भक्तिभाव से प्रेरित हो यह, चित्त उसी में लीन रहो।।

विषयों की आशा नहीं जिनको, साम्य-भाव-धन रखते हैं।
निज-पर के हित-साधन में जो, निश दिन तत्पर रहते हैं।
स्वार्थ-त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत् के, दु:ख-समूह को हरते हैं।।

रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उन्हीं जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे ।।
नहीं सताउं किसी जीव को, झूठ कभी नहीं कहा करुं।
परधन वनिता पर न लुभाउं, संतोषामृत पिया करूं।।

अहंकार का भाव न रखूं, नहीं किसी पर क्रोध करूं।
देख दूसरों की बढती को, कभी न ईर्ष्या-भाव धरूं।।
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल-सत्य व्यवहार करूं ।
बने जहां तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूं।।

मैत्री-भाव जगत् में मेरा, सब जीवों पर नित्य रहे ।
दीन-दु:खी जीवों पर मेरे उर से करुणा स्रोत बहे।।
दुर्जन क्रूर कुमार्ग-रतों पर, क्षोभ नहीं मुझ को आवे।
साम्य-भाव रखूं मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे।।

गुणी जनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड आवे।
बने जहां तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे।।
होउं नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे।।

कोई बुरा कहे या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीउं या, मृत्यु आज ही आ जावे।।
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे।
तो भी न्याय-मार्ग से मेरा, कभी न पग डिगने पावे।।

होकर सुख में मग्न न फूलें, दु:ख में कभी न घबरावें।
पर्वत-नदी-श्मशान भयानक, अटवी से नहीं भय खावें।।
रहे अडोल अकंप निरंतर, यह मन दृढत्तर बन जावे।
इष्ट-वियोग अनिष्ट-योग में, सहनशीलता दिखलावें।।

सुखी रहें सब जीव जगत के कोई कभी न घबरावे।
वैर, पाप, अभिमान छोड जग, नित्य नया मंगल गावें।।
घर-घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावे।
ज्ञान-चरित्र उन्नत कर अपना, मनुज-जन्म-फल सब पावें।।

ईति-भीति व्यापे नहीं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे ।
धर्म-निष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करें।।
रोग-मरी-दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शांति से जीया करें ।
परम अहिंसा धर्म जगत् में, फैल सर्व-हित किया करें।।

फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे ।
अप्रिय-कटुक-कठोर शब्द नहीं, कोई मुख से कहा करे।।
बनकर सब 'युगवीर' हृदय से, देशोन्नति-रत रहा करे।
वस्तु-स्वरूप विचार खुशी से, सब दुख संकट सहा करे।।

रचना : पंडित जुगलकिशोर मुख्तार 'युगवीर'

हे प्रभु वीर ! दया के सागर

हे प्रभु वीर ! दया के सागर ।
सब गुण आगर ज्ञान उजागर ।।
जब तक जीऊँ हंस-हंस जीऊँ।
सत्य - अहिंसा अमृत पीऊँ।।
छोडूँ - लोभ, घमंड बुराई ।
चाहूँ सबकी नित्य भलाई ।।
जो करना सो अच्छा करना।
फिर दुनिया में किससे डरना ।।
हे प्रभु मेरा मन हो सुन्दर।
वाणी सुन्दर, जीवन सुन्दर।।

आओ प्रकाश करें

एक दीप प्रेम-स्नेह-सद्भाव का जलाएं
मन वचन कर्म से ईर्ष्या-द्वेष को हटायें
सबका सहयोग लें, सबको सहयोग दें
हिंसा से कर किनारा, महावीर को अपनाएं
बस एक दीप प्रेम-स्नेह-सद्भावना का जलाएं
आओ प्रकाश करें.....

वाणी में मृदुता हो, भावों में करुणा हो
विश्वास एवं समर्पण का जीवन हो
बन्धुत्व भाव की बाती से जग उजियारा हो
बस एक दीप प्रेम-स्नेह-सद्भावना का जलाएं
आओ प्रकाश करें.....

अनुजों का सम्बल बनो
भटकों को जीवन धारा से जोडो
अभागो के भाग्य विधाता बनने हेतु
बस एक दीप प्रेम-स्नेह-सद्भाव का जलाएं
आओ प्रकाश करें.....

सुख समृद्धि की वर्षा हो
नई चेतना का उद्गम हो
लक्ष्मी की सरिता अंतिम घर तक पहुंचाने को
बस एक दीप प्रेम-स्नेह-सद्भावना का जलाएं
आओ प्रकाश करें.....

चमत्कारी जय जाप

पूज्य जयमलजी हुआ अवतारी, ज्यांरा नाम तणी महिमा भारी।
कष्ट टले मिटे ताप तपो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो।।

पूज्य नामे सब कष्ट टले, वलि भूत-प्रेत पिण नाय छले।
मिले न चोर हुवे गुप-चुपो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो।।

लक्ष्मी दिन-दिन बढ जावे, वलि दु:ख नेडो तो नहीं आवे।
व्यापार में होवे बहुत नफो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो।।

अडियो काम तो होय जावे, वलि बिगड्यो काम भी बण जावे।
भूल-चूक नहीं खाय डफो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो।।

राज-काज में तेज रहे, वलि खमा-खमा सब लोक कहे।
आछी जागा जाय रूपो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो।।

पूज्य नाम तणो जो लियो ओटो, ज्यारे कदे नहीं आवे टोटो।
घर-घर बारणे काय तपो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो।।

एक माला नित नेम रखो, किणी बात तणो नहीं होय धखो।
खाली विमाण अरु टलेजी सपो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो।।

स्व भक्त तणी प्रतिपाल करे, मुनि राम सदा तुम ध्यान धरे।
कोई परतिख बात मती उथपो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो।।

पूज्य नाम प्रताप इसो जबरो, दु:ख कष्ट-रोग जावे सगरो।
केई भवां रा कर्म खपो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो।।

जय जाप कष्ट निवारक है, विघ्न निवारक है। एवम् तनाव उद्धारक है।।

इस जाप को पूर्ण श्रद्धा से प्रति दिन पाँच बार
जपने से सुख, शांति एवम् समृद्धि मिलती है।

THE CATALYST HYMNS

Everybody has a few favourites in life which gives them peace of mind, physical relaxation and in a way a sense of Bliss.

Included in this anthology are a few of my favourite hymns authored by different devotees. You whould notice that, through all of them runs a single chord leading us towards calmness and a sense of total detachment, away from the boiling cauldron, that is life. we thought it appropriate to present these before you so that they can form the core of your philosophy of life, assist you as a catalyst to structure a well balanced life devoid of stress, rancour and greed.

OM SHANTHI ! OM SHANTHI ! OM SHANTHI !

N. SUGALCHAND JAIN
SUGAL & DAMANI
11, PONNAPPA LANE
TRIPLICANE, CHENNAI 600 005
TAMILNADU (INDIA)

Place : CHENNAI
Dt. 01-05-2007